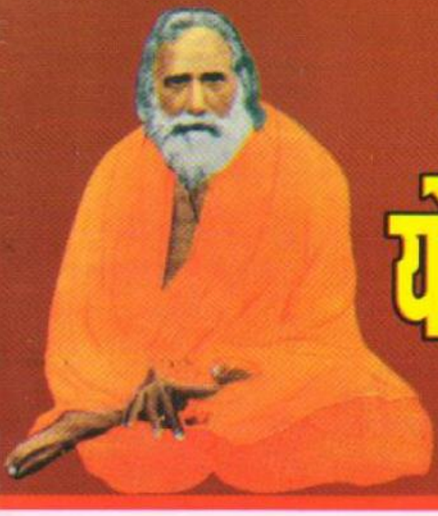

''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर द्वारा संचालित

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम

जंगल धूसड़, गोरखपुर

छात्रावास नियमावली एवं विवरणिका

सम्पर्क सूत्र – 7897475917, 9794299451

Web : www.mpm.ac.in Email ID : mpmpg5@gmail.com

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ

योगिराज बाबा गम्भीनाथ सिद्धपुरुष थे। वे योग मानव थे। वे समाधि योगिसिद्ध महात्मा थे। उनका प्रभाव असाधारण है। उन्होंने नाथ सम्प्रदाय के योग सिद्धान्त को पुनर्जीवन प्रदान किया। उनकी भगन्नाम–साधना निर्गुण–सगुणवादी नाम–चिंतन परम्परा नहीं, योग के विवेक से प्रतिपादित और प्रतिपुष्ट थी। नाथयोग परम्परा में इधर सात–आठ सौ वर्ष में उनके जैसे योगी का दर्शन नहीं होता है। वे शान्ति और गम्भीरता के उज्ज्वलतम रूप थे। बड़े–बड़े संतों और महात्माओं ने उनके चरणों में अपनी श्रद्धा समर्पित कर आत्म–मोक्ष का विधान प्राप्त किया। हिमाचल से कन्याकुमारी तक के इस भारत–भूमि में बीसवीं शताब्दी में इतने सिद्धयोगी का दर्शन अत्यन्त दुर्लभ था। उन्होंने मानवता को योग–शाक्ति से सम्पन्न किया।

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ ने हठयोग, राजयोग और लययोग के क्षेत्र में सिद्धि प्राप्त की। (उन्होंने महायोगी गोरखनाथ जी की वाणी से आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा प्राप्त थी।) उनका योग गुरु श्री गोरखनाथ जी की योग पद्धति का अनुगामी था। उन्होंने बीसवीं शताब्दी में शिवावतारी गुरु श्री गोरखनाथ जी की योग साधना पद्धति का पूर्ण प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने योग और ज्ञान का समन्वय किया। योगिराज योग रहस्य के सर्वमान्य मर्मज्ञ थे। वे माया के बन्धन में पूर्ण मुक्त सिद्धपुरुष हुए। उन्होंने गुरु श्रीगोरखनाथ की योग परम्परा पथ का अनुगामी बनकर शिव–शक्ति की एकात्मकता–कुण्डलिनी के पूर्ण जागरण का साक्षात्कार किया।

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी के पूर्वाश्रम के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ कह पाना कठिन हैं। उनका जन्म विक्रमीय उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे चरण में कश्मीर के एक गाँव के समृद्ध परिवार में हुआ था। बचपन से ही वे अध्यात्ममुखी थे। नाथपंथ के एक योगी के मार्गदर्शन पर वे गोरक्षपीठ में आए तथा तत्कालीन महन्त गोपालनाथ जी महाराज द्वारा नाथपंथ के योगमार्ग में दीक्षित कर लिए गए। सिद्धपीठ गुरु श्री गोरखनाथ जी की तपोभूमि को उन्होंने अपनी तपस्या से अक्षय समृद्धि प्रदान की। सम्वत् 1975 विक्रमी की चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को प्रातः सवा नौ बजे अपने परमधाम की यात्रा पर निकल पड़े। श्री गोरखनाथ मन्दिर के पवित्र प्रांगण में ही उनका समाधि मन्दिर है। जो शाश्वत सत्य और शान्ति का दिव्य प्रतीक हैं, उसमें उनकी प्रतिमा प्रतिष्ठित है।

हमारे आदर्श

महाराणा प्रताप

स्वदेश, स्वधर्म, स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वाले राष्ट्रनायक परमवीर महाराणा प्रताप का उज्ज्वल प्रदीप्त चरित्र हमारा आदर्श है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के श्रीमुख से निःसृत –

जननी जन्म भूमिश्च,
स्वर्गादपि गरीयसी

और पुण्य प्रताप महाराणा प्रताप का यह उद्घोष कि –

"जो हठि राखे धर्म को तिहि राखै करतार"

हमारे सदा स्मरणीय बोधवाक्य हैं।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् को राष्ट्रनायक महाराणा प्रताप के नाम पर स्थापित करने के पीछे यही स्पष्ट उद्देश्य और प्रयोजन है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की संस्थाओं में अध्ययन अध्यापन करने वाला युवा आधुनिक ज्ञान–विज्ञान एवं कला की कालोचित शिक्षा ग्रहण करने के साथ–साथ अपने देश और समाज के प्रति सहज निष्ठा और अटूट श्रद्धा का भी पाठ पढ़ें।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्

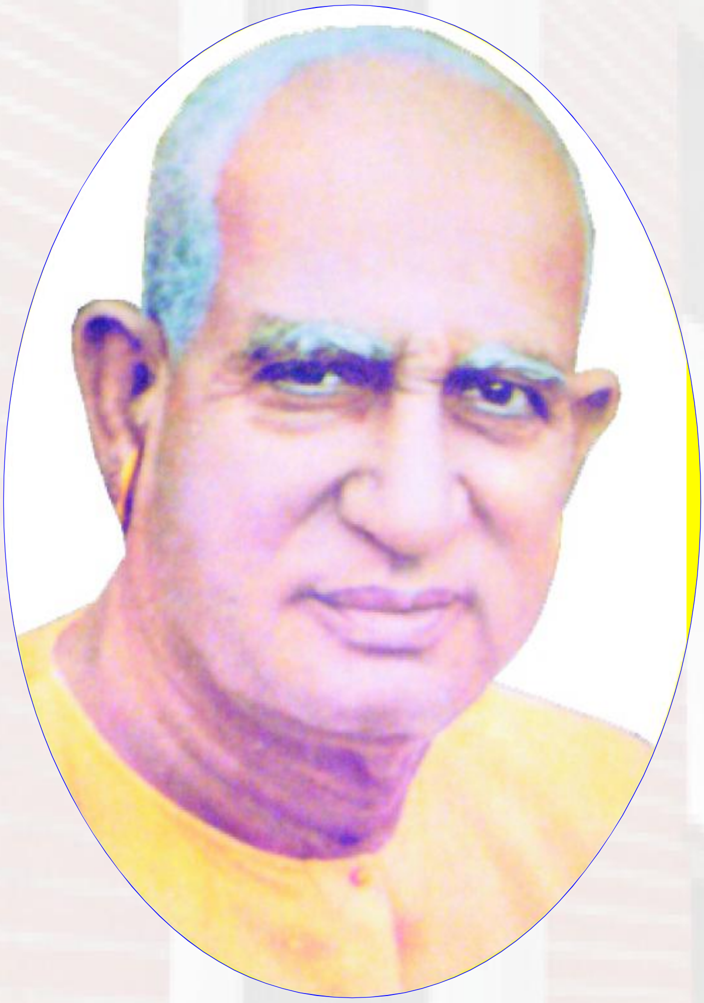

भारत के स्वाधीनता संग्राम में बालगंगाधर तिलक का युग समाप्त होते–होते कांग्रेस के नेतृत्व पर प्रश्न चिह्न होने लगा था। 1920 ई. के बाद क्रान्तिकारी आन्दोलन ने अलग राह पकड़ी और 1930–31 ई. तक आते–आते कांग्रेस के स्पष्ट सहयोग के अभाव में क्रान्तिकारियों का दमन करने में ब्रिटिश हुकूमत सफल रही। 1915–16 ई. के बाद इसी काल खण्ड में स्वाधीनता संग्राम की अगुवा कांग्रेस मुस्लिम तुष्टीकरण की भी शिकार हुई। इस युग तक अंग्रेजों द्वारा भारत में अंग्रेजियत में रमे बाबुओं की फौज खड़ी करने की शिक्षा नीति का प्रभाव भी दिखने लगा था। देश के समक्ष एक चुनौती थी कि भारत की नयी पीढ़ी भारतीयता के साँचे में कैसे ढले। अपनी संस्कृति और स्वदेशी दृष्टि की शिक्षा प्रणाली और शिक्षा नीति ही एक मात्र इस चुनौती का समाधन था। इस चुनौती को भी भारतीय मनीषियों ने स्वीकार किया। महामना मदन मोहन मालवीय के अथक प्रयास से 4 फरवरी 1916 ई. को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय लोकार्पित हो गया। भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार हेतु स्थापित यह विश्वविद्यालय पूरे देश में भारतीय संस्कृति पर आधरित शिक्षा प्रति का एक नया मानक बना और इसी धारा को तत्कालीन युगपुरुष गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने आगे बढ़ाते हुए 1932 ई. में गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की नींव रखी। ब्रिटिश

हुकूमत को शिक्षा के भी क्षेत्र में भारतीय मनीषियों द्वारा यह कड़ी चुनौती थी, कि भारत अपने पैरों पर खड़ा होने में समर्थ है, वह अपना तंत्र, अपनी शिक्षा, अपनी संस्कृति और अपने मूल्यों की पुनः स्थापना अपनी योजनानुसार करेगा। यह दूर दृष्टि थी कि देश जब आजाद होगा तब देश की व्यवस्था चलाने हेतु भारतीय पद्धति के शिक्षा संस्थानों से निकले युवाओं की फौज तैयार मिलेगी। देश पराधीन था। जनता विपन्न थी। ज्ञान कौशल के अभाव में स्वाभिमान और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की चेतना का जागरण दुष्कर था। स्वतंत्रता संग्राम के एक सशक्त सिपाही महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज अपनी संकल्प शक्ति के बल पर

आजादी की लड़ाई के एक प्रमुख शस्त्र के रूप में शैक्षिक क्रान्ति के पथ पर भी आगे बढ़े। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत 1932 ई. में बक्शीपुर में किराये के एक मकान में 'महाराणा प्रताप क्षत्रिय स्कूल' प्रारम्भ हुआ। 1935 ई. में इसे जूनियर हाईस्कूल की मान्यता मिल गयी और 1936 ई. में यहाँ हाईस्कूल की पढ़ाई प्रारम्भ की गयी तथा इसका नाम 'महाराणा प्रताप हाई स्कूल' हो गया। इसी बीच महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के अथक प्रयास

से गोरखपुर के सिविल लाइन्स में पाँच एकड़ भूमि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् को प्राप्त हो गयी और महाराणा प्रताप हाईस्कूल का केन्द्र सिविल लाइन्स हो गया तथा देश के आजाद होते समय यह विद्यालय महाराणा प्रताप इण्टरमीडिएट कॉलेज के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। महाराणा प्रताप डिग्री कॉलेज एवं महाराणा प्रताप महिला डिग्री कॉलेज की स्थापना महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का अगला पड़ाव था। तदनन्तर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने दोनों महाविद्यालयों को गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु समर्पित किया और विश्वविद्यालय की स्थापना के आधार स्तम्भ बने। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय का यह परिसर आज भी 'महाराणा प्रताप परिसर' के नाम से जाना जाता है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा वर्तमान में पचास से अधिक शिक्षण–प्रशिक्षण, चिकित्सा, तकनीकी तथा सेवा संस्थाएँ संचालित हो रहीं हैं। इनमें महाराणा प्रताप कन्या इण्टर कॉलेज एवं महाराणा प्रताप महिला पी.जी. कॉलेज, रामदत्तपुर, महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज, सिविल लाइन्स, दिग्विजयनाथ पी.जी. कॉलेज, सिविल लाइन्स, श्री गोरक्षनाथ संस्कृत महाविद्यालय, गोरखनाथ; दिग्विजयनाथ एल.टी. प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी.

एड्.) सिविल लाइन्स; महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर, महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कॉलेज, सिविल लाइन्स महाराणा प्रताप पॉलिटेक्निक, गोरखनाथ; महाराणा प्रताप मंगला देवी सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल, बेतियाहाता; महाराणा प्रताप कृषक इण्टर कॉलेज, जंगल धूसड़; श्री गोरक्षनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गोरखनाथ; दिग्विजयनाथ इण्टर कॉलेज, चौक माफी पीपीगंज; गुरु गोरखनाथ विद्यापीठ, पितेश्वरनाथ मन्दिर, भरोहिया पीपीगंज; महायोगी गुरु गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौक माफी पीपीगंज; प्रताप आश्रम, गोलघर, महाराणा प्रताप मीराबाई महिला छात्राावास, सिविल लाइन्स, महन्त दिग्विजयनाथ महिला छात्राावास, सिविल लाइन्स, गुरुगोरक्षनाथ संस्कृत छात्राावास, गोरखनाथ; महाराणा प्रताप टेलरिंग स्कूल, सिविल लाइन्स; महायोगी गुरु गोरक्षनाथ योग संस्थान, गोरखनाथ मन्दिर; श्री गोरखनाथ आध ुनिक व्यायामशाला, गोरखनाथ मन्दिर; योगिराज बाबा गम्भीरनाथ निःशुल्क सिलाई–कढ़ाई एवं पेण्टिंग प्रशिक्षण केन्द्र, जंगल धूसड; महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ गौ सेवा केन्द्र, गोरखनाथ; गुरु श्री गोरक्षनाथ सेवा संस्थान, गोरखनाथ; गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ महाविद्यालय, चौक बाजार; दिग्विजयनाथ इण्टर कॉलेज, चौक बाजार दिग्विजयनाथ पूर्व माध्यमिक विद्यालय, चौक बाजार; दिग्विजयनाथ प्राथमिक विद्यालय, चौक बाजार; आदि शक्ति माँ पाटेश्वरी पब्लिक स्कूल, देवीपाटन तुलसीपुर, बलरामपुर आदि प्रमुख शिक्षण संस्थाएँ हैं। चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय; श्री गोरखनाथ मन्दिर परिसर, महन्त दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक चिकित्सालय; श्री गोरखनाथ मन्दिर परिसर एवं आदि शक्ति माँ पाटेश्वरी चिकित्सालय देवीपाटन, गोरखनाथ मन्दिर द्वारा महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अन्तर्गत ही संचालित है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा का शुभारम्भ महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का एक युगान्तकारी प्रकल्प है जो शिक्षा–स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक प्रतिमान संस्था के रुप में विकसित किये जाने की योजना के क्रियान्वयन की आधारशिला है। योगिराज बाबा गम्भीर नाथ सेवाश्रम (छात्रावास), जंगल धूसड़, गोरखपुर इसी महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित संस्था है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित छात्रावास

1. प्रताप आश्रम, गोलघर, गोरखपुर।
2. महाराणा प्रताप मीराबाई महिला छात्रावास, सिविल लाइन्स, गोरखपुर।
3. गुरु श्री गोरखनाथ संस्कृत छात्रावास, गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर।
4. दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महिला छात्रावास, सिविल लाइन्स , गोरखपुर।
5. योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम, जंगल धूसड़, गोरखपुर।
6. आदिशक्ति माँ पाटेश्वरी महिला छात्रावास, विश्वविद्यालय, गोरखपुर
7. महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
8. महन्त गोपालनाथ सेवाश्रम (छात्रावास), महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
9. आदिशक्ति माँ पाटेश्वरी वनवासी थारू छात्रावास, तुलसीपुर, बलरामपुर।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित छात्रावास आश्रम संस्कृति के वाहक है। छात्रावास विद्यार्थियों के आवास नहीं अपितु उनकी तपस्थली है। छात्रावास की दिनचर्या इस बात को ध्यान में रखकर, विकसित की जा रहा है कि आवासीय विद्यार्थियों के जीवन में श्रम, सात्विकता, सदाचार, नैतिकता, अनुशासन, नियमबद्धता, शील, संस्कृति इत्यादि जीवन मूल्यों का यथोचित विकास हो सके। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् अपने उद्देश्य से युक्त युवा गढ़ने में छात्रावास प्रशासन प्रयत्नशील रहता है। पैराग्राफ बदलना है। छात्रावास का वातावरण आश्रम की तरह सृजित करने में आप छात्रावासियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। आप की दिनचर्या, आपका रहन–सहन, छात्रावास की स्वच्छता, दीवालों के चित्र इत्यादि से ही चिंतन बनता है। छात्रावास प्रशासन आपके प्रयत्नों में पूर्णतः सहभागी होगा। वस्तुतः पूर्णता तभी प्राप्त होगी जब छात्रावासी भी इस परिकल्पना के आचरण व्यवहार से जमीनी हकीकत में बदलने हेतु प्रयत्नशील हों। हमारा आग्रह है– शिक्षार्थ आइए–सेवार्थ जाइए। विद्या की इस तपस्थली से तपकर तेजस्वी बनिए तथा सूर्य की तरह स्वयं प्रकाशित भी होइए और औरों को प्रकाशित भी करिए। परिवार, समाज, राष्ट्र के लिए उपयोगी एवं संवेदनशील बनें अपने मानव जीवन के परम उद्देश्य की प्राप्ति करें। जीवन उद्देश्य प्राप्ति की इस दिशा में आइए हम सभी मिलकर छात्रावास संस्कृति का निरन्तर विकास करते रहें।

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर से 100 मीटर उत्तर स्थिति छात्रों के लिए संचालित इस छात्रावास में निम्न सुविधाएँ उपलब्ध हैं

1. सुरम्य प्राकृतिक छत्रछाया से आच्छादित भव्य परिसर।
2. आध्यात्मिक एवं सात्विक वातावरण।
3. विद्युत, सोलर एवं जनरेटर की सुविधा।
4. पुस्तकालय एवं वाचनालय।
5. व्याख्यान/सेमिनार कक्ष।
6. वाह्य एवं आन्तरिक खेल कूद की सम्यक व्यवस्था।
7. शुद्ध पेय जल की व्यवस्था।
8. अनुशासन एवं सुरक्षा।
9. प्राथमिक उपचार की व्यवस्था एवं बुलावे पर 20 मिनट के अंदर गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय द्वारा एम्बुलेंस सहित चिकित्सा सुविधा।
10. पठन–पाठन की निरन्तर निगरानी।
11. निरन्तर देख–रेख में घर की तरह भोजनालय।
12. प्रत्येक छात्रावासी के लिए चौकी/आलमारी/कुर्सी/मेज।

प्रवेश सम्बन्धी नियम

1. सामान्यतया महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित किसी भी संस्था का स्नातक–स्नातकोत्तर विद्यार्थी प्रवेश ले सकता है।
2. स्थान रिक्त होने पर किसी संस्था के विद्यार्थी को प्रबन्धक महोदय की अनुमति पर छात्रावास आवंटित किया जायेगा।
3. आवेदन पत्र महाविद्यालय कार्यालय से किसी भी कार्यादिवस में प्रातः 10 बजे से 3 बजे के मध्य प्राप्त कर उसे पूर्णरूप से भरकर महाविद्यालय कार्यालय में ही निर्धारित तिथि तक जमा करना अनिवार्य होगा।
4. साक्षात्कार के लिए निर्धारित तिथि एवं समय पर अभिभावक एवं विद्यार्थी दोनों की उपस्थिति अनिवार्य होगी।
5. छात्रावास आवंटन तिथि से 15 दिन के अंदर छात्रावास में उपस्थिति अनिवार्य होगीं, अन्यथा आवंटन निरस्त माना जायेगा।
6. सामान्यतया 15 जुलाई से 15 मई तक छात्रावास में आवासीय सुविधा प्राप्त होगी।

आग्रह

- छात्रावास में अपने घर की तरह रहें। स्वच्छता स्वास्थ्य एवं पठन–पाठन युक्त वातावरण के लिए अपरिहार्य हैं। अतः अपना कक्ष एवं परिसर स्वच्छ रखें।
- छात्रावास में अपने माता–पिता एवं घोषित अभिभावक के अतिरिक्त किसी को भी मिलने हेतु न बुलाएँ। माता–पिता एवं घोषित अभिभावक से मुलाकात छात्रावास अधीक्षक की अनुमति से ही करें।
- सामूहिक जीवन का अभ्यास करें, सामूहिक निर्णय का पालन करें।
- स्व अनुशासन आत्म विकास की कुन्जी है, इसे छात्रावास जीवन में उतारें।
- प्रातः एवं सायं की प्रार्थना सभा में अवश्य उपस्थित रहें।
- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा आयोजित, संस्थापक सप्ताह समारोह (04–10 दिसम्बर), युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथजी महाराज एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह में सभी की उपस्थिति अनिवार्य होगी।

अनुशासनोपदेश

- छात्रावास का मुख्य द्वार रात्रि 8 बजे से प्रातः 06 बजे तक बन्द रहेगा। इस कालखण्ड में किसी भी छात्रावासी को प्रवेश नहीं मिलेगा।
- रात्रि में सोने के अतिरिक्त किसी भी समय कक्ष में छात्रावासी की उपस्थिति के समय अन्दर से कक्ष के दरवाजे की सिटकिनी बन्द नहीं की जायेगी।
- छात्रावास की एक समान दिनचर्या सभी के लिए मान्य होगी।
- समय–समय पर आवश्यकतानुसार छात्रावास हित में लिए गए निर्णय सर्व स्वीकार्य होंगे।
- छात्र अपनी कोई समस्या छात्रावास अधीक्षक से तुरन्त बताएं।
- प्रत्येक छात्रावासी को छात्रावास भोजनालय में ही भोजन एवं जलपान करना होगा।
- भोजनालय के नियम सभी के लिए समान एवं सर्वमान्य होंगे।

वार्षिक शुल्क-विवरण

प्रवेश शुल्क	–	200
कक्ष शुल्क	–	4500
विद्युत शुल्क	–	2700
पुस्तकालय एवं वाचनालय शुल्क	–	2000
सेवा शुल्क	–	3600
रख–रखाव शुल्क	–	2000
योग	–	**15000**

15000 रूपये वार्षिक शुल्क एक साथ प्रवेश के समय जमा करना होगा।

भोजन शुल्क

भोजन एवं जलपान शुल्क प्रति पाली 40 रू0 अर्थात प्रतिदिन 80 रू0 (2400 रू0 प्रतिमाह) होगा। छात्रावासी भोजन की सुनिश्चित/घोषित सामग्री एवं उसकी गुणवत्ता का निरन्तर परीक्षण कर सकते हैं। स्वच्छता छात्रावास भोजनालय की विशेषता होगी। छात्रावास प्रशासन स्वच्छता एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करेगा तथा छात्रावासी भी इसे बनाए रखने में सहयोग करने हेतु छात्रावास प्रभारी के माध्यम से अधिकृत होंगे।

卐 भारत वही भूमि है जहां से दर्शन और आत्मज्ञान की ऊँची लहरों ने बार–बार उठकर समस्त विश्व को ओत–प्रोत कर दिया था और यह वही भूमि है जहां से पुनः एक बार उस ज्वारभाटे के उठने की आवश्यकता है जो पतनोन्मुख मानवता को नव–जीवन और शक्ति दे सके।

- युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ

卐 शिक्षा राष्ट्रीय विकास का एक प्रबल साधन है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जो कि भारतीयों में देश की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति पर आधारित एक राष्ट्रीय व्यक्तित्व का विकास करें।

- युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ

卐 हिन्दू जीवन पद्धति दुनिया की श्रेष्ठतम् जीवन पद्धति है। हमारे ऋषियों महर्षियों ने अनेक पीढ़ियों की तपस्या से मानवता को सुख और शान्ति प्रदान करने वाली संस्कृति का विकास किया। मनुष्य की कौन कहे इस सृष्टि के चर–अचर सभी में ईश्वर का दर्शन किया और इसका उपदेश किया। ऐसे श्रेष्ठतम् संस्कृति में छूत–अछूत, ऊँच–नीच, पुरुष–महिला विभेद की बात हास्यास्पद लगता है। यह हिन्दू समाज की विकृति है जिसे दूर किए बगैर हिन्दू संस्कृति का तेजोमय प्रकाश का दर्शन नहीं किया जा सकता।

- राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ

卐 अतीत जीवन की दुर्बलताओं के विषय में चिन्तन नहीं करना चाहिए। दुर्बलता और पाप कर्मो की बात जितना ही स्मरण करेंगे, उतना ही दुर्बलता और पाप के संस्कार गढ़तर होते जायेंगे। सर्वदा आत्मचिन्तन और सद्चिन्तन करना चाहिए। आत्मचिन्तन द्वारा सब प्रकार के अशुभ संस्कार विनष्ट हो जाते हैं। जो जैसा चिंतन करता है वह वैसा हो जाता है। आत्मा स्वरूपतः शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, आनन्दमय और सब शक्तियों का आधार है इस बात को कभी भी न भूलो।

- योगिराज बाबा गम्भीरनाथ

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम

(महाविद्यालय छात्रावास)

छात्रावास की पूर्ण योजना

छात्रावास नियमावली एवं विवरणिका